यजुर्वेद

अध्याय ३१

अनुवाद कर्ता: सञ्जय मोहन मित्तल

Yajurveda

Chapter 31

Translated by: Sañjay Mohan Mittal

साराँश

इस अध्याय में नारायण ऋषि प्रभु के विस्तार का वर्णन कर रहें हैं। सृष्टि की रचना को समझाते हुए वह ईश्वर को इस जगत् का रचयिता बतलाते हैं। सृष्टि का रूप ईश्वर के विधान के अनुसार ही है और सृष्टि में प्रत्येक रचना में उस ईश्वर की ही अनुभूति होती है। आखिर के कुछ मन्त्रों में उत्तर नारायण ऋषि प्रभु से सभी को ज्ञानवान् बनाने की प्रार्थना कर रहें हैं। और यह कह रहे हैं कि केवल ईश्वर प्राप्ति ही एकमात्र मुक्ति का मार्ग है; इसके अलावा और कोई रास्ता नहीं।

अथैकत्रिंशात्तमाऽध्यायारम्भः

प्रथम मन्त्र में ईश्वर के विराट स्वरूप का वर्णन किया गया है।

नारायण ऋषिः। पुरुषो देवता। ३१(३५) अक्षराणि। निचृदार्ष्यनुष्टुप् छन्दः। गान्धारः स्वरः।

स॒हस्र॑शीर्षा॒ पुरु॑षः सहस्रा॒क्षः स॒हस्र॑पात्।

स भूमि॑ꣳ स॒र्वत॑ स्पृ॒त्वाऽत्य॑तिष्ठद्दशाङ्गु॒लम् ॥१॥

यजुः ३१:१, ऋग् १०:७:९०:१, साम ६१७, अथर्व १९:१:६:१

सहस्र॑शी॒र्षेति॑ सहस्र॑ऽशीर्षा। पुरु॑षः। स॒ह॒स्रा॒क्ष इति॑ सहस्र॒ऽअ॒क्षः। स॒हस्र॑पादिति॑ स॒हस्र॑ऽपात्।

सः। भूमि॑म्। स॒र्वत॑ः। स्पृ॒त्वा। अति॑। अ॒ति॒ष्ठ॒त्। द॒शा॒ङ्गु॒लमिति॑ दशऽअ॒ङ्गु॒लम् ॥१॥

(*सहस्रऽशीर्षा*) **असंख्य सिरों,** (*सहस्रऽअक्षः*) **असंख्य आँखों और** (*सहस्रऽपात्*) **असंख्य हाथ पैरों वाला** (*सः*) **वह** (*पुरुषः*) **परमात्मा,** (*दशऽअङ्गुलम्*) **दस भूतों (पाँच तन्मात्र व पाँच स्थूल भूत) से निर्मित इस** (*भूमिम्*) **ब्रह्माण्ड के सभी** (*सर्वतः*) **स्थानों और** (*स्पृत्वा*) **सभी दिशाओं में व्याप्त होकर भी, इससे** (*अति*) **परे** (*अतिष्ठत्*) **पहले से ही स्थिर है, अर्थात् ब्रह्माण्ड से भी विशाल ईश्वर, इस ब्रह्माण्ड के सृष्टि और विनाश चक्र से परे है।**

दूसरे मन्त्र में ईश्वर को सबका स्वामी घोषित किया गया है।

नारायण ऋषिः। ईशानो देवता। ३१(३५) अक्षराणि। निचृदार्ष्यनुष्टुप् छन्दः। गान्धारः स्वरः।

पुरु॑षऽए॒वेदꣳ सर्व॒ यद् भू॒तं यच्च॑ भा॒व्य॑म्। उ॒ताम॑त॒त्वस्येशा॑नो॒ यदन्ने॑ना॒ति॒रोह॑ति ॥२॥

यजुः ३१:२, ऋग् १०:७:९०:२, साम ६१९-६२०, अथर्व १९:१:६:४

पुरु॑षः। ए॒व। इ॒दम्। सर्व॑म्। यत्। भू॒तम्। यत्। च॒। भा॒व्य॑म्।

उ॒त। अ॒मृ॒त॒त्वस्येत्य॑मृत॒ऽत्वस्य॑। ईशा॑नः। यत्। अन्ने॑न। अ॒ति॒रोहतीत्य॑ति॒ऽरोह॑ति ॥२॥

Yajurveda chapter 31

<u>Synopsis</u>

In this chapter sage Naaraayaṇa describes God's vastness. Evaluating the entire creation, he identifies God as the creator of this universe. The characteristics of this universe are as per the guidelines established by God. Everywhere in this universe, presence of God is felt. In the later part, sage Uttara Naaraayaṇa is praying to God, to grant knowledge and wisdom to everyone. He also reiterates that the knowing God is the only pathway that leads to salvation. There is no other way besides this.

In the first mantra the sage describes God's all pervading vastness.

1. **ṛiṣhiḥ** naaraayaṇaḥ, **devataa** puruṣhaḥ, **vowels** 31(35), **chhandaḥ** nichṛid aarṣhy anuṣhṭup, **svaraḥ** gaandhaaraḥ.

sahasrasheerṣhaa puruṣhaḥ sahasraakṣhaḥ sahasrapaat,
sa bhoomiṁ sarvata spṛitvaa'tyatiṣhṭhaddashaaṅgulam.

Yajuḥ 31:1, Ṛig 10:7:90:1, Saama 617, Atharva 19:1:6:1

sahasra-sheerṣhaa puruṣhaḥ sahasra-akṣhaḥ sahasra-paat
saḥ bhoomim sarvataḥ spṛitvaa ati atiṣhṭhat dasha-aṅgulam.

(*puruṣhaḥ*) **God has** (*sahasra*) **innumerable** (*sheerṣhaa*) **heads,** (*sahasra*) **innumerable** (*akṣhaḥ*) **eyes and** (*sahasra*) **innumerable** (*paat*) **limbs. In this** (*bhoomim*) **universe which is composed of** (*dasha*) **ten** (*aṅgulam*) **basic elements (5 subtle and 5 conspicuous elements),** (*saḥ*) **God** (*spṛitvaa*) **pervades** (*sarvata*) **every place and every direction. His vastness is, however,** (*ati*) **beyond the universe as well. He has been** (*atiṣhṭhat*) **stable forever and is beyond the cycles of creation and destruction experienced by this universe.**

In the second mantra the sage declares God as the supreme lord of all.

2. **ṛiṣhiḥ** naaraayaṇaḥ, **devataa** eeshaanaḥ, **vowels** 31(35), **chhandaḥ** nichṛid aarṣhy anuṣhṭup, **svaraḥ** gaandhaaraḥ.

puruṣha'evedaṁ sarvañ yad bhootañ yachcha bhaavyam,
utaamṛitatvasyeshaano yadannenaatirohati.

Yajuḥ 31:2, Ṛig 10:7:90:2, Saama 619-620, Atharva 19:1:6:4

puruṣhaḥ eva idam sarvam yat bhootam yat cha bhaavyam
uta amṛita-tvasya eeshaanaḥ yat annena ati-rohati.

(*इदम्*) **इस सृष्टि चक्र से बन्धे हुए** (*यत्*) **जो** (*भूतम्*) **उत्पन्न हो चुके हैं** (*च*) **व** (*यत्*) **जो** (*भाव्यम्*) **भविष्य में उत्पन्न होंगे, और इनके** (*उत*) **अतिरिक्त** (*यत्*) **जो** (*अन्नेन*) **ईश्वर ध्यान रूपी अन्न से अपने आत्मबल को** (*अतिऽरोहति*) **अत्यन्त बढ़ा कर** (*अमृतऽत्वस्य*) **मोक्ष को प्राप्त हो गए हैं, इन** (*सर्वम्*) **सभी का** (*ईशानः*) **स्वामी** (*पुरुषः*) **परमेश्वर** (*एव*) **ही है।**

***आगामी मन्त्रों में भागों का वर्णन आलंकारिक है और ईश्वर के अनन्त विस्तार को दर्शाने के लिए है। ईश्वर एक ही है और वह भागों में बंटा हुआ नहीं है।**

तीसरे मन्त्र में परमात्मा के अनन्त विस्तार का वर्णन किया गया है।

नारायण ऋषिः। पुरुषो देवता। ३१(३४) अक्षराणि। निचृदार्ष्यनुष्टुप् छन्दः। गान्धारः स्वरः।

एतावानस्य महिमाऽतो ज्यायाँश्च पूरुषः।

पादोऽस्य विश्वा भूतानि त्रिपादस्यामृतं दिवि ॥३॥

यजुः ३१:३, ऋग् १०:७:९०:३, साम ६१९-६२०, अथर्व १९:१:६:३

एतावान्। अस्य। महिमा। अतः। ज्यायान्। च। पूरुषः पुरुषऽइति पुरुषः।

पादः। अस्य। विश्वा। भूतानि। त्रिपादिति त्रिऽपात्। अस्य। अमृतम्। दिवि ॥३॥

(*एतावान्*) **यह ब्रह्माण्ड तो** (*अस्य*) **इस परमेश्वर की** (*महिमा*) **महिमा का ही प्रतीक है। वास्तव में तो वह** (*पूरुषः*) **परमात्मा** (*अतः*) **इस ब्रह्माण्ड से भी** (*ज्यायान्*) **बहुत अधिक बड़ा है** (*च*) **और** (*भूतानि*) **जड़ चेतन समेत यह** (*विश्वा*) **समस्त विश्व** (*अस्य*) **उसका** (*पादः*) **मात्र चौथा भाग* ही है।** (*अस्य*) **उसके बाकि** (*त्रिऽपात्*) **तीनों भागों* में** (*दिवि*) **प्रकाशवान** (*अमृतम्*) **मोक्षस्वरूप अमृत लोक है जहाँ निर्वाण प्राप्त पुण्य आत्माएं विचरण करती हैं।**

चौथे मन्त्र में भी परमात्मा के अनन्त विस्तार का वर्णन किया गया है।

नारायण ऋषिः। पुरुषो देवता। ३२(३६) अक्षराणि। आर्ष्यनुष्टुप् छन्दः। गान्धारः स्वरः।

त्रिपादूर्ध्व उदैत्पुरुषः पादोऽस्येहाभवत् पुनः।

ततो विष्वङ् व्यक्रामत्साशनानशनेऽअभि ॥४॥

यजुः ३१:४, ऋग् १०:७:९०:४, साम ६१८, अथर्व १९:१:६:२

त्रिपादिति त्रिऽपात्। ऊर्ध्वः। उत्। ऐत्। पुरुषः। पादः। अस्य। इह। अभवत्। पुनरिति पुनः।

ततः। विष्वङ्। वि। अक्रामत्। साशनानशनेऽइति साशनानशने। अभि ॥४॥

(*पुरुषः*) **परमात्मा के** (*त्रिऽपात्*) **तीन भाग* इस** (*उत्*) **अशान्त** (*ऐत्*) **जगत से** (*ऊर्ध्वः*) **परे है;** (*अस्य*) **उसी के** (*पुनः*) **तो** (*पादः*) **एक भाग में** (*इह*) **यह ब्रह्माण्ड** (*अभवत्*) **है।** (*ततः*) **उसमें** (*विष्वङ्*) **अनेक**

Bound to (*idam*) **this cycle of life and death,** (*yat*) **those who have** (*bhootam*) **already taken birth** (*cha*) **and** (*yat*) **those who** (*bhaavyam*) **will sometime in future; and** (*uta*) **on the other hand even** (*yat*) **those who** (*ati-rohati*) **nourished their souls** (*annena*) **by meditating on God and have** (*amṛita-tvasya*) **attained nirvana,** (*puruṣhaḥ*) **God is** (*eva*) **indeed the** (*eeshaanaḥ*) **supreme lord of** (*sarvam*) **all.**

*** The fractions/parts mentioned in the following mantras are metaphorical, and are there just to describe God's infinite vastness. God is one and is indivisible.**

In the third mantra the sage describes God's infinite vastness.

3. **ṛiṣhiḥ** naaraayaṇaḥ, **devataa** puruṣhaḥ, **vowels** 31(34), **chhandaḥ** nichṛid aarṣhy anuṣhṭup, **svaraḥ** gaandhaaraḥ.

etaavaanasya mahimaa'to jyaayåå̊shcha pooruṣhaḥ,
paado'sya vishvaa bhootaani tripaadasyaamṛitan divi.

Yajuḥ 31:3, Ṛig 10:7:90:3, Saama 619-620, Atharva 19:1:6:3

etaavaan asya mahimaa ataḥ jyaayaan cha pooruṣhaḥ
paadaḥ asya vishvaa bhootaani tripaat asya amṛitam divi.

(*etaavaan*) **This universe is a mere** (*mahimaa*) **glorification** (*asya*) **of God. In fact** (*pooruṣhaḥ*) **God's vastness** (*jyaayaan*) **exceeds** (*ataḥ*) **this universe.** (*bhootaani*) **All of the living beings** (*cha*) **and non-conscious elements of** (*vishvaa*) **this universe constitute** (*paadaḥ*) **only the fourth fraction*** (*asya*) **of God. The remaining** (*tripaat*) **three fractions*** (*asya*) **of God represent the** (*divi*) **illuminated** (*amṛitam*) **blissful realm where the liberated souls, who have attained *mokṣha*, reside.**

In the fourth mantra the sage continues to describe God's infinite vastness.

4. **ṛiṣhiḥ** naaraayaṇaḥ, **devataa** puruṣhaḥ, **vowels** 32(36), **chhandaḥ** aarṣhy anuṣhṭup, **svaraḥ** gaandhaaraḥ.

tripaadoordhva udaitpuruṣhaḥ paado'syehaabhavat punaḥ,
tato viṣhvaṅ vyakraamatsaashanaanashane' abhi.

Yajuḥ 31:4, Ṛig 10:7:90:4, Saama 618, Atharva 19:1:6:2

tri-paat oordhvaḥ ut ait puruṣhaḥ paadaḥ asya iha abhavat punaḥ
tataḥ viṣhvaṅ vi akraamat saashana-anashane abhi.

(*puruṣhaḥ*) **God's** (*tripaad*) **three parts* are** (*oordhvaḥ*) **elevated and are beyond the** (*ut*) **turbulences of** (*ait*) **this universe.** (*asya*) **His fourth** (*paadaḥ*) **part*** (*abhavat*) **holds** (*iha*) **this entire universe** (*punaḥ*) **indeed. In** (*tataḥ*) **this universe,** (*abhi*) **all beings who** (*saashana*) **experience hunger as well as the non-conscious elements that** (*anashane*) **consume nothing,** (*viṣhvaṅ*) **perpetually move in all directions; and their** (*vi akraamat*) **motion is sustained only by God's empowerment.**

दिशाओं में विचरने वाले *(अभि)* **सभी, चाहे वह** *(साशनानशने)* **भोजन करने वाले चेतन प्राणी हो या भोजन न करने वाले जड़ पदार्थ, परमेश्वर की प्रेरणा व शक्ति से ही** *(वि)* **सब ओर** *(अक्रामत्)* **गति करते हैं।**

पाँचवे मन्त्र में सृष्टि के रचनाक्रम का वर्णन किया गया है।

नारायण ऋषिः। पुरुषो देवता। ३२(३३) अक्षराणि। आर्ष्यनुष्टुप् छन्दः। गान्धारः स्वरः।

ततो॑ वि॒राड॑जायत वि॒राजो॒ऽअधि॒ पूरु॑षः।

स जा॒तोऽ अत्य॑रिच्यत प॒श्चाद् भूमि॒मथो॑ पु॒रः ॥५॥

यजुः ३१:५, ऋग् १०:७:९०:५, साम ६२१, अथर्व १९:१:६:९

तत॑ः। वि॒राडिति॑ वि॒ऽराट्। अ॒जा॒य॒त॒। वि॒राज॒ इति॑ वि॒ऽराज॑ः। अधि॑। पूरु॑षः पुरु॑ष॒ऽइति॑ पुरु॑षः।

सः। जा॒तः। अति॑। अ॒रि॒च्य॒त॒। प॒श्चात्। भूमि॑म्। अथो॒ऽ इत्यथो॑। पु॒रः ॥५॥

प्रलय के बाद ब्रह्माण्ड के सभी जड़ पदार्थ अपनी प्राकृतिक मूल अणुओं की अवस्था में आकर गतिहीन हो गए। *(ततः)* **तब परमात्मा के सानिध्य से प्रकृति में पुनः चेतना जागृत होनी प्रारम्भ हुई और उसने अव्यक्त रूप छोड़ एक** *(विऽराट्)* **विशाल पिण्ड के समान महत् रूप** *(अजायत)* **धारण किया। यह** *(विऽराजः)* **विराट् पिण्ड** *(पुरुषः)* **परमात्मा के ही** *(अधि)* **नियन्त्रण में था।** *(जातः)* **उत्पन्न हुआ** *(सः)* **यह पिण्ड** *(अति)* **अत्यन्त** *(अरिच्यत)* **प्रकाशवान् (अग्नि का गोला) था।** *(पश्चात्)* **उसके बाद इस विराट् गोले से** *(भूमिम्)* **पृथ्वी सूर्यादि ग्रहों और नक्षत्रों का निर्माण किया** *(अथो)* **और फिर जीवात्माओं के** *(पुरः)* **शरीरों को बनाया।**

छठे मन्त्र में भोग्य पदार्थों और उनको देने वाले पशुओं की रचना का वर्णन किया गया है।

नारायण ऋषिः। पुरुषो देवता। ३०(३०) अक्षराणि। विराडार्ष्यनुष्टुप् छन्दः। गान्धारः स्वरः।

तस्मा॑द्य॒ज्ञात् स॒र्व॒हु॒तः सम्भृ॑तं पृषदा॒ज्यम्।

प॒शूँस्ताँश्च॑क्रे वाय॒व्या॒ना॒र॒ण्या ग्रा॒म्याश्च॒ ये ॥६॥ यजुः ३१:६, ऋग् १०:७:९०:८, अथर्व १९:१:६:१४

तस्मा॑त्। य॒ज्ञात्। स॒र्व॒हु॒त इति॑ सर्व॒ऽहुत॑ः। सम्भृ॑त॒मिति॒ सम्॒ऽभृ॑तम्। पृ॒ष॒दा॒ज्यमिति॑ पृषत्॒ऽआ॒ज्यम्।

प॒शून्। तान्। च॒क्रे॒। वा॒य॒व्या॒न्। आ॒र॒ण्याः। ग्रा॒म्याः। च॒। ये ॥६॥

(तस्मात्) **उस** *(यज्ञात्)* **परोपकार से परिपूर्ण, पूजनीय,** *(सर्वऽहुतः)* **सब कुछ देने वाले प्रभु से** *(पृषत्ऽआज्यम्)* **दूध, दही, घी आदि जैसे सब भोग्य पदार्थ** *(सम्ऽभृतम्)* **उत्पन्न हुए। इन पदार्थों को देने वाले** *(ये)* **जो** *(वायव्यान्)* **बलवान्** *(आरण्याः)* **जंगली** *(च)* **और** *(ग्राम्याः)* **पालतू** *(पशून्)* **पशु हैं**

In the fifth mantra the sage describes the steps in the creation of the universe.

5. **ṛiṣhiḥ** naaraayaṇaḥ, **devataa** puruṣhaḥ, **vowels** 32(33), **chhandaḥ** aarṣhy anuṣhṭup, **svaraḥ** gaandhaaraḥ.

tato viraaḍajaayata viraajo'adhi pooruṣhaḥ,
sa jaato' atyarichyata pashchaad bhoomimatho puraḥ.

Yajuḥ 31:5, Ṛig 10:7:90:5, Saama 621, Atharva 19:1:6:9

tataḥ vi-raaṭ ajaayata vi-raajaḥ adhi pooruṣhaḥ
saḥ jaataḥ ati arichyata pashchaat bhoomim atho puraḥ.

With the destruction of the universe, all of the matter returned to its sub atomic dormant state. (*tataḥ*) **Then the new creation started. With impetus from God's consciousness the matter started activity and** (*ajaayata*) **turned into a** (*viraaṭ*) **huge ball of mass.** (*saḥ jaataḥ*) **This** (*viraajaḥ*) **huge ball was** (*ati*) **extremely** (*arichyata*) **radiant like fire and was under** (*pooruṣhaḥ*) **God's** (*adhi*) **control.** (*pashchaat*) **Thereafter, from this huge mass emerged numerous** (*bhoomim*) **celestial bodies including our planet Earth and** (*atho*) **then the physical** (*puraḥ*) **bodies (humans and animals) for the souls were created.**

In the sixth mantra the sage describes God as the creator of nourishments and the animals who produce them.

6. **ṛiṣhiḥ** naaraayaṇaḥ, **devataa** puruṣhaḥ, **vowels** 30(30), **chhandaḥ** viraaḍ aarṣhy anuṣhṭup, **svaraḥ** gaandhaaraḥ.

tasmaadyajñaat sarvahutaḥ sambhṛitam pṛiṣhadaajyam,
pashoో̐stā̐ashchakre vaayavyaanaaraṇyaa graamyaashcha ye.

Yajuḥ 31:6, Ṛig 10:7:90:8, Atharva 19:1:6:14

tasmaat yajñaat sarva-hutaḥ sam-bhṛitam pṛiṣhat-aajyam
pashoon taan chakre vaayavyaan aaraṇyaaḥ graamyaaḥ cha ye.

(*tasmaat*) **From that** (*yajñaat*) **benevolent, reverend,** (*sarva-hutaḥ*) **supreme benefactor,** (*sam-bhṛitam*) **emerged the nourishments like** (*pṛiṣhat*) **milk, yogurt and** (*aajyam*) **clarified butter. The** (*aaraṇyaaḥ*) **wild** (*cha*) **and** (*graamyaaḥ*) **domesticated** (*pashoon*) **animals** (*ye*) **who** (*vaayavyaan*) **possess strength to produce these nourishments,** (*taan*) **they were also** (*chakre*) **created by God.**

(*तान्*) **उनको भी उसी ईश्वर ने** (*चक्रे*) **बनाया।**

सातवे मन्त्र में वेदों के ज्ञान की उत्पत्ति का वर्णन किया गया है।

नारायण ऋषिः। स्रष्टेश्वरो देवता। ३२(३२) अक्षराणि। आर्ष्यनुष्टुप् छन्दः। गान्धारः स्वरः।

तस्माद्यज्ञात् सर्वहुतऽऋचः सामानि जज्ञिरे।

छन्दांꣳसि जज्ञिरे तस्माद्यजुस्तस्मादजायत ॥७॥ यजुः ३१:७, ऋग् १०:७:९०:९, अथर्व १९:१:६:१३

तस्मात्। यज्ञात्। सर्वहुत इति सर्वऽहुतः। ऋचः। सामानि। जज्ञिरे।

छन्दांꣳसि। जज्ञिरे। तस्मात्। यजुः। तस्मात्। अजायत ॥७॥

(*तस्मात्*) **उस** (*यज्ञात्*) **परोपकार से परिपूर्ण, पूजनीय,** (*सर्वऽहुतः*) **सब कुछ देने वाले प्रभु से** (*ऋचः*) **ऋग्वेद और** (*सामानि*) **सामवेद** (*जज्ञिरे*) **उत्पन्न हुए;** (*तस्मात्*) **उसी से** (*यजुः*) **युजुर्वेद** (*अजायत*) **उत्पन्न हुआ;** (*तस्मात्*) **उसी से** (*छन्दांसि*) **अथर्ववेद** (*जज्ञिरे*) **उत्पन्न हुआ।**

आठवे मन्त्र में पशुओं की रचना का वर्णन जारी है।

नारायण ऋषिः। पुरुषो देवता। ३१(३२) अक्षराणि। निचृदार्ष्यनुष्टुप् छन्दः। गान्धारः स्वरः।

तस्मादश्वाऽअजायन्त ये के चोभयादतः।

गावो ह जज्ञिरे तस्मात् तस्माज्जाताऽअजावयः ॥८॥

यजुः ३१:८, ऋग् १०:७:९०:१०, अथर्व १९:१:६:१२

तस्मात्। अश्वाः। अजायन्त। ये। के। च। उभयादतः उभयादत इत्युभयऽदतः।

गावः। ह। जज्ञिरे। तस्मात्। तस्मात्। जाताः। अजावयः ॥८॥

(*तस्मात्*) **उसी परमात्मा से** (*अश्वाः*) **घोड़े** (*अजायन्त*) **उत्पन्न हुए** (*च*) **और** (*ये*) **जो** (*के*) **कोई** (*उभयऽदतः*) **दो ओर दांतों के जबड़ों वाले** (*जाताः*) **पशु हैं,** (*गावः*) **गाय,** (*अजावयः*) **बकरी भेड़ आदि वह भी** (*ह*) **निश्चय ही** (*तस्मात्*) (*तस्मात्*) **उसी परमात्मा से** (*जज्ञिरे*) **उत्पन्न हुए।**

नौवे मन्त्र में योग ध्यान आदि साधनों से उत्तम कर्म और ज्ञान द्वारा ईश्वर से मेल रखने का निर्देश दिया गया है।

नारायण ऋषिः। पुरुषो देवता। ३१(३२) अक्षराणि। निचृदार्ष्यनुष्टुप् छन्दः। गान्धारः स्वरः।

तं यज्ञं बर्हिषि प्रौक्षन् पुरुषं जातमग्रतः।

तेन देवाऽअयजन्त साध्याऽऋषयश्च ये ॥९॥ यजुः ३१:९, ऋग् १०:७:९०:७, अथर्व १९:१:६:११

In the seventh mantra the sage describes God as the source of all eternal knowledge.

7. ṛiṣhiḥ naaraayaṇaḥ, **devataa** sraṣhṭeshvaraḥ, **vowels** 32(32), **chhandaḥ** aarṣhy anuṣhṭup, **svaraḥ** gaandhaaraḥ.

tasmaadyajñaat sarvahuta'ṛichaḥ saamaani jajñire,
chhandaaṁsi jajñire tasmaadyajustasmaadajaayata.

Yajuḥ 31:7, Ṛig 10:7:90:9. Atharva 19:1:6:13

tasmaat yajñaat sarva-hutaḥ ṛichaḥ saamaani jajñire
chhandaaṁsi jajñire tasmaat yajuḥ tasmaat ajaayata.

(*tasmaat*) **From that** (*yajñaat*) **benevolent, reverend,** (*sarva-hutaḥ*) **supreme benefactor,** (*jajñire*) **emerged the knowledge contained in the** (*ṛichaḥ*) **Ṛigveda and the** (*saamaani*) **Saamaveda;** (*tasmaat*) **from him** (*ajaayata*) **emerged the knowledge contained in the** (*yajuḥ*) **Yajurveda;** (*tasmaat*) **from him** (*jajñire*) **emerged the knowledge contained in the** (*chhandaaṁsi*) **Atharvaveda.**

In the eighth mantra the sage continues to describe the creation of animals.

8. ṛiṣhiḥ naaraayaṇaḥ, **devataa** puruṣhaḥ, **vowels** 31(32), **chhandaḥ** nichṛid aarṣhy anuṣhṭup, **svaraḥ** gaandhaaraḥ.

tasmaadashvaa'ajaayanta ye ke chobhayaadataḥ,
gaavo ha jajñire tasmaat tasmaajjaataa'ajaavayaḥ.

Yajuḥ 31:8, Ṛig 10:7:90:10, Atharva 19:1:6:12

tasmaat ashvaaḥ ajaayanta ye ke cha ubhayaadataḥ
gaavaḥ ha jajñire tasmaat tasmaat jaataaḥ ajaavayaḥ.

(*tasmaat*) **From that God** (*ajaayanta*) **emerged the** (*ashvaaḥ*) **horses** (*cha*) **and all** (*ke*) **other** (*jaataaḥ*) **animals** (*ye*) **that possess a jaw with** (*ubhayaadataḥ*) **two rows of teeth. The** (*gaavaḥ*) **cows,** (*aja-avayaḥ*) **goats, sheep etc.** (*ha*) **also definitely** (*jajñire*) **emerged** (*tasmaat*) (*tasmaat*) **from him.**

In the ninth mantra the sage directs us to connect with God using yoga and mediation, and through righteous knowledge and actions.

9. ṛiṣhiḥ naaraayaṇaḥ, **devataa** puruṣhaḥ, **vowels** 31(32), **chhandaḥ** nichṛid aarṣhy anuṣhṭup, **svaraḥ** gaandhaaraḥ.

tañ yajñam barhiṣhi praukṣhan puruṣhañ jaatamagrataḥ,
tena devaa' ayajanta saadhyaa' ṛiṣhayashcha ye.

Yajuḥ 31:9, Ṛig 10:7:90:7, Atharva 19:1:6:11

tam yajñam barhiṣhi pra aukṣhan puruṣham jaatam agrataḥ
tena devaaḥ ayajanta saadhyaaḥ ṛiṣhayaḥ cha ye.

तम् । यज्ञम् । बर्हिषि । प्र । औक्षन् । पुरुषम् । जातम् । अग्रतः।
तेन । देवाः। अयजन्त । साध्याः। ऋषयः। च । ये ॥९॥

सब (*पुरुषम्*) **पुरियों में निवास करनेवाले,** (*अग्रतः*) **सबसे पहले से ही** (*जातम्*) **विद्यमान,** (*तम्*) **उस** (*यज्ञम्*) **पूजनीय प्रभु से,** (*देवाः*) **विद्वान्** (*बर्हिषि*) **वासनारहित हृदय को** (*प्र*) **सब ओर से** (*औक्षन्*) **सत्विक विचारों से सिञ्चते हुए,** (*अयजन्त*) **मेल करते हैं** (*च*) **और** (*ये*) **जो** (*ऋषयः*) **ऋषि है, वह परार्थ भाव से योग, ध्यान आदि द्वारा** (*तेन*) **उसकी** (*साध्याः*) **साधना करते हैं।**

दसवे मन्त्र में ईश्वर की कल्पना, पुरुष के रूप में कर उसके अंगों पर विचार किया गया है। ईश्वर निराकार है इसलिए यह तुलना मात्र आलंकारिक है वास्तविक नहीं।

नारायण ऋषिः। पुरुषो देवता। ३१(३४) अक्षराणि। निचृदार्ष्यनुष्टुप् छन्दः। गान्धारः स्वरः।

यत्पुरुषं व्यदधुः कतिधा व्यकल्पयन्।
मुखं किमस्यासीत्किं बाहू किमूरू पादाऽउच्येते ॥१०॥

यजुः ३१:१०, ऋग् १०:७:९०:११, अथर्व १९:१:६:५

यत्। पुरुषम्। वि। अदधुः। कतिधा। वि। अकल्पयन्।
मुखम्। किम्। अस्य। आसीत्। किम्। बाहूऽइति बाहू। किम्। ऊरूऽइत्यूरू। पादौ। उच्येतेऽइत्युच्येते ॥१०॥

(*यत्*) **जिस** (*पुरुषम्*) **परमेश्वर के विषय में** (*वि*) **विभिन्न प्रकार से** (*अदधुः*) **धारणा करनी चाहिए उसको इस सृष्टि में** (*कतिधा*) **कितने प्रकार से** (*वि*) (*अकल्पयन्*) **कल्पित किया गया? यहाँ** (*अस्य*) **उसके** (*मुखम्*) **मुख के समान श्रेष्ठ** (*किम्*) **कौन** (*आसीत्*) **है?** (*बाहू*) **भुजाबलधारी** (*किम्*) **कौन है?** (*ऊरू*) **जंघा के समान कौन और** (*पादौ*) **पाँव के समान** (*किम्*) **किसको** (*उच्येते*) **कहा गया?**

पिछले मन्त्र में उठे प्रश्नों के उत्तर में ग्यारहवे मन्त्र में समाज के वर्णों की ईश्वर के अङ्गों से तुलना की गई है। शरीर के समान समाज के भी सभी अङ्गों के मिलकर चलने से ही समाज सुचारु रूप से चल सकता है।

नारायण ऋषिः। पुरुषो देवता। ३१(३२) अक्षराणि। निचृदार्ष्यनुष्टुप् छन्दः। गान्धारः स्वरः।

ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीद् बाहू राजन्यः कृतः।
ऊरू तदस्य यद्वैश्यः पद्भ्याᳬशूद्रोऽअजायत ॥११॥

यजुः ३१:११, ऋग् १०:७:९०:१२, अथर्व १९:१:६:६

(*barhiṣhi*) **By eliminating the bondage of desires from their hearts and by** (*pra*) (*aukṣhan*) **sprinkling their hearts with benevolent thoughts,** (*devaaḥ*) **the scholars** (*ayajanta*) **connect with** (*tam*) **that,** (*agrataḥ*) **forever** (*jaatam*) **present,** (*yajñam*) **reverend God who** (*puruṣham*) **resides in the entire universe.** (*cha*) **And the** (*ye*) (*ṛiṣhayaḥ*) **sages try to** (*saadhyaaḥ*) **attain** (*tena*) **him through the means of yoga and meditation.**

In the the tenth mantra the sage has imaged God as a human and his various organs are discussed. God is without any physical form and all of these comparisons are merely metaphorical.

10.ṛiṣhiḥ naaraayaṇaḥ, **devataa** puruṣhaḥ, **vowels** 31(34), **chhandaḥ** nichṛid aarṣhy anuṣhṭup, **svaraḥ** gaandhaaraḥ.

yatpuruṣham vyadadhuḥ katidhaa vyakalpayan,
mukhaṅ kimasyaaseetkim baahoo kimooroo paadaa'uchyete.

Yajuḥ 31:10, Ṛig 10:7:90:11, Atharva 19:1:6:5

yat puruṣham vi adadhuḥ katidhaa vi akalpayan
mukham kim asya aaseet kim baahoo kim ooroo paadau uchyete.

In (*katidhaa*) **how many ways, the** (*puruṣham*) **Supreme Soul,** (*yat*) **who can be** (*adadhuḥ*) **thought of in** (*vi*) **diverse perspectives, has been** (*vi*) (*akalpayan*) **visualized in this society?** (*kim*) **Who** (*aaseet*) **represents** (*asya*) **his** (*mukham*) **mouth?** (*kim*) **Who carries the strength of the** (*baahoo*) **arms?** (*kim*) **Who performs the functions of the** (*ooroo*) **thighs and who should be** (*uchyete*) **addressed to as the** (*paadau*) **feet?**

Answering the questions raised in the last mantra, in the eleventh mantra the sage compares various sections of the society with various organs of the body. Similar to a body, all parts have to act in harmony for the society to work as a whole.

11.ṛiṣhiḥ naaraayaṇaḥ, **devataa** puruṣhaḥ, **vowels** 31(32), **chhandaḥ** nichṛid aarṣhy anuṣhṭup, **svaraḥ** gaandhaaraḥ.

braahmaṇo'sya mukhamaaseed baahoo raajanyaḥ kṛitaḥ,
ooroo tadasya yad vaishyaḥ padbhyaaṁ shoodro' ajaayata.

Yajuḥ 31:11, Ṛig 10:7:90:12, Atharva 19:1:6:6

ब्राह्मणः। अस्य। मुखम्। आसीत्। बाहूऽइतिं बाहू। राजन्यः। कृतः।
ऊरूऽइत्यूरू। तत्। अस्य। यत्। वैश्यः। पद्भ्यामितिं पत्ऽभ्याम्। शूद्रः। अजायत ॥११॥

वेदों का ज्ञान फैलाने वाले ईश्वर के उपासक (*ब्राह्मणः*) **ब्राह्मण** (*अस्य*) **इस समाज का** (*मुखम्*) **मुख** (*आसीत्*) **हैं। धर्म के रक्षक** (*राजन्यः*) **क्षत्रिय व राजा इसकी** (*बाहू*) **भुजाओं के समान** (*कृतः*) **बने हैं।** (*अस्य*) **इसकी** (*ऊरू*) **जंघाएं** (*तत्*) **वह हैं,** (*यत्*) **जो अन्न उगाने वाले, गौ को पालने वाले व व्यापार के द्वारा समाज के लिए संसाधन जुटाने वाले** (*वैश्यः*) **वैश्य हैं; और सेवा करने वाले** (*शूद्रः*) **शूद्र इसके** (*पत्ऽभ्याम्*) **पाँव जैसे** (*अजायत*) **हो जाते हैं।**

बारहवे मन्त्र में ग्रह नक्षत्रों व प्राकृतिक बलों की तुलना ईश्वर के अङ्गों से की गई है।
नारायण ऋषिः। पुरुषो देवता। ३२(३२) अक्षराणि। आर्ष्यनुष्टुप् छन्दः। गान्धारः स्वरः।

चन्द्रमा मनसो जातश्चक्षोः सूर्यो ऽअजायत।
श्रोत्राद्वायुश्च प्राणश्च मुखादग्निरजायत ॥१२॥ यजुः ३१:१२, ऋग् १०:७:९०:१३, अथर्व १९:१:६:७

चन्द्रमाः। मनसः। जातः। चक्षोः। सूर्यः। अजायत।
श्रोत्रात्। वायुः। च। प्राणः। च। मुखात्। अग्निः। अजायत ॥१२॥

उसके (*मनसः*) **मन की शीतलता से** (*चन्द्रमाः*) **चन्द्रमा** (*जातः*) **उत्पन्न हुआ और** (*चक्षोः*) **आँखों से** (*सूर्यः*) **सूर्य** (*अजायत*) **बना।** (*श्रोत्रात्*) **कानों से पाँच प्रकार के** (*वायुः*) **वायु** (*च*) **और** (*प्राणः*) **प्राण बने** (*च*) **और** (*मुखात्*) **मुख से** (*अग्निः*) **अग्नि** (*अजायत*) **उत्पन्न हुई।**

बारहवे मन्त्र की आध्यात्मिक दृष्टि से भी व्याख्या की जा सकती है।
ईश्वर प्रणिधान करने वाले (*जातः*) **मनुष्य के** (*मनसः*) **मन में** (*चन्द्रमाः*) **चन्द्रमा के समान शीतलता और** (*चक्षोः*) **नेत्रों में** (*सूर्यः*) **सूर्य के समान ज्ञान का प्रकाश स्थिर** (*अजायत*) **होता है। वह** (*श्रोत्रात्*) **कानों में श्रवणशक्ति को** (*वायुः*) **बलवान् कर** (*प्राणः*) **योग्यता बढाता है** (*च*) **और उसके** (*मुखात्*) **मुख से निकले शब्द** (*अग्निः*) **अग्नि के समान तेजस्वी हो** (*अजायत*) **जाते हैं।**

तेहरवे मन्त्र में पुनः ईश्वर को ही जगत् का रचयिता बतलाया गया है।
नारायण ऋषिः। पुरुषो देवता। ३२(३२) अक्षराणि। आर्ष्यनुष्टुप् छन्दः। गान्धारः स्वरः।

नाभ्याऽआसीदन्तरिक्षꣳ शीर्ष्णो द्यौः समवर्त्तत।
पद्भ्यां भूमिर्दिशः श्रोत्रात्तथा लोकाँ२॥ऽअकल्पयन् ॥१३॥

यजुः ३१:१३, ऋग् १०:७:९०:१४, अथर्व १९:१:६:८

braahmaṇaḥ asya mukham aaseet baahoo raajanyaḥ kṛitaḥ
ooroo tat asya yat vaishyaḥ padbhyaam shoodraḥ ajaayata.

(*braahmaṇaḥ*) **Brahmins who are identified as devotees of God responsible for spreading the Vedic knowledge** (*aaseet*) **are the** (*mukham*) **head and the mouth** (*asya*) **of this society.** (*raajanyaḥ*) **Kṣhatriyas and kings, who protect and uphold the dharma** (*kṛitaḥ*) **become its** (*baahoo*) **arms. The** (*vaishyaḥ*) **Vaishya,** (*tat*) **those** (*yat*) **who are engaged in farming, rearing of cows and commerce in order to provide for the society, are** (*asya*) **its** (*ooroo*) **thighs and the** (*shoodraḥ*) **servants** (*ajaayata*) **form its** (*padbhyaam*) **feet.**

In the twelfth mantra the sage perceives various celestial bodies and forces of nature as God's organs.

12.ṛiṣhiḥ naaraayaṇaḥ, **devataa** puruṣhaḥ, **vowels** 32(32), **chhandaḥ** aarṣhy anuṣhṭup, **svaraḥ** gaandhaaraḥ.

chandramaa manaso jaatashchakṣhoḥ sooryo' ajaayata,
shrotraadvaayushcha praaṇashcha mukhaadagnirajaayata.

Yajuḥ 31:12, Ṛig 10:7:90:13, Atharva 19:1:6:7

chandramaaḥ manasaḥ jaataḥ chakṣhoḥ sooryaḥ ajaayata
shrotraat vaayuḥ cha praaṇaḥ cha mukhaat agniḥ ajaayata.

From the calmness of his (*manasaḥ*) **mind** (*jaataḥ*) **evolved the** (*chandramaaḥ*) **moon, and from his** (*chakṣhoḥ*) **eyes** (*ajaayata*) **evolved the** (*sooryaḥ*) **sun. From the** (*shrotraat*) **ears evolved five types of** (*vaayuḥ*) **airs** (*cha*) **and** (*praaṇaḥ*) **breaths,** (*cha*) **and from his** (*mukhaat*) **mouth** (*ajaayata*) **evolved the** (*agniḥ*) **radiant fire.**

The twelfth mantra can also be explained with the comparisons, with the bodily organs of the virtuous humans.

All (*jaataḥ*) **humans who are steadfastly engaged in the performance of the deeds prescribed in the Vedas, develop calmness in their** (*manasaḥ*) **minds akin to the calmness of the** (*chandramaaḥ*) **moon. They** (*ajaayata*) **develop** (*sooryaḥ*) **sun like illumination of knowledge in their** (*chakṣhoḥ*) **eyes. They** (*vaayuḥ*) **intensify the hearing capabilities of their** (*shrotraat*) **ears** (*cha*) **and** (*praaṇaḥ*) **progress in life.** (*cha*) **And the words coming out of their** (*mukhaat*) **mouths** (*ajaayata*) **are brilliant like** (*agniḥ*) **fire.**

In the thirteenth mantra the sage, again identifies God as the source of this universe.

13.ṛiṣhiḥ naaraayaṇaḥ, **devataa** puruṣhaḥ, **vowels** 32(32), **chhandaḥ** aarṣhy anuṣhṭup, **svaraḥ** gaandhaaraḥ.

naabhyaa' aaseedantarikṣhaṁ sheerṣhṇo dyauḥ samavarttata,
padbhyaam bhoomirdishaḥ shrotraattathaa lokåå2'akalpayan.

Yajuḥ 31:13, Ṛig 10:7:90:14, Atharva 19:1:6:8

नाभ्याः। आसीत्। अन्तरिक्षम्। शीर्ष्णः। द्यौः। सम्। अवर्त्तत।
पद्भ्यामिति पत्ऽभ्याम्। भूमिः। दिशः। श्रोत्रात्। तथा। लोकान्। अकल्पयन्॥१३॥
उसके (*शीर्ष्णः*) **सिर से** (*द्यौः*) **प्रकाशवान् द्युलोक अर्थात् ग्रह नक्षत्र आदि** (*सम्*) (*अवर्त्तत*) **बने;** (*नाभ्याः*) **नाभि अर्थात् मध्यभाग से** (*अन्तरिक्षम्*) **अन्तरिक्ष** (*आसीत्*) **बना;** (*पत्ऽभ्याम्*) **पाँवों से** (*भूमिः*) **पृथिवी और** (*श्रोत्रात्*) **कानों के बीच अवकाश से सब** (*दिशः*) **दिशाएं बनी।** (*तथा*) **इस प्रकार सभी** (*लोकान्*) **लोकों की** (*अकल्पयन्*) **रचना ईश्वर के सामर्थ्य से ही हुई।**

चौदहवे मन्त्र में यज्ञ में समय के महत्त्व का वर्णन किया गया है।
नारायण ऋषिः। पुरुषो देवता। ३१(३३) अक्षराणि। निचृदार्ष्यनुष्टुप् छन्दः। गान्धारः स्वरः।

यत्पुरुषेण हविषा देवा यज्ञमतन्वत।

वसन्तोऽस्यासीदाज्यं ग्रीष्मऽइध्मः शरद्धविः॥१४॥

यजुः ३१:१४, ऋग् १०:७:९०:६, अथर्व १९:१:६:१०

यत्। पुरुषेण। हविषा। देवाः। यज्ञम्। अतन्वत।
वसन्तः। अस्य। आसीत्। आज्यम्। ग्रीष्मः। इध्मः। शरत्। हविः॥१४॥
(*यत्*) **जब** (*देवाः*) **विद्वान् ऋषि आदि ने,** (*हविषा*) **निस्वार्थ त्याग की भावना से देने वाले** (*पुरुषेण*) **परमात्मा से** (*यज्ञम्*) **मानसिक सम्बन्ध रूपी यज्ञ का** (*अतन्वत*) **विस्तार किया, तब यही पाया कि समय व ऋतु चक्र को भी उसी ने बनाया है। यज्ञ में समय का भी महत्त्व है।** (*वसन्तः*) **वसन्त ऋतु अर्थात् सुबह का समय** (*अस्य*) **इस यज्ञ का** (*आज्यम्*) **घी** (*आसीत्*) **है,** (*ग्रीष्मः*) **ग्रीष्म ऋतु अर्थात् दोपहर का समय इसका** (*इध्मः*) **इन्धन है और** (*शरत्*) **शरद् ऋतु अर्थात् रात्री इसकी** (*हविः*) **हवन सामग्री है। ईश्वर का ध्यान व प्रणिधान सभी समय कर सकते है परन्तु उसके लिए सुबह का समय श्रेष्ठ है।**

पंद्रहवे मन्त्र में परमात्मा के साथ सम्बन्ध रखने का विचार है।
नारायण ऋषिः। पुरुषो देवता। ३२(३४) अक्षराणि। आर्ष्यनुष्टुप् छन्दः। गान्धारः स्वरः।

सप्तास्यासन् परिधयस्त्रिः सप्त समिधः कृताः।

देवा यद्यज्ञं तन्वानाऽअबध्नन् पुरुषं पशुम्॥१५॥

यजुः ३१:१५, ऋग् १०:७:९०:१५, अथर्व १९:१:६:१५

सप्त। अस्य। आसन्। परिधय इति परिऽधयः। त्रिः। सप्त। समिध इति सम्ऽइधः। कृताः।
देवाः। यत्। यज्ञम्। तन्वानाः। अबध्नन्। पुरुषम्। पशुम्॥१५॥

naabhyaaḥ aaseet antarikṣham sheerṣhṇaḥ dyauḥ sam avarttata
padbhyaam bhoomiḥ dishaḥ shrotraat tathaa lokaan akalpayan.

From his (*sheerṣhṇaḥ*) **head i.e. the knowledge** (*sam*) (*avarttata*) **emanated the** (*dyauḥ*) **illustrious celestial bodies, from his** (*naabhyaaḥ*) **naval i.e. the middle part** (*aaseet*) **originated the** (*antarikṣham*) **space and from his** (*padbhyaam*) **feet originated the** (*bhoomiḥ*) **earth. The emptiness between the** (*shrotraat*) **ears became the source of all** (*dishaḥ*) **directions.** (*tathaa*) **That is how, all of the** (*lokaan*) **Worlds** (*akalpayan*) **came into existence due to God's capabilities.**

In the fourteenth mantra the sage describes the importance of time for the performance of yajña.

14.ṛiṣhiḥ naaraayaṇaḥ, **devataa** puruṣhaḥ, **vowels** 31(33), **chhandaḥ** nichṛid aarṣhy anuṣhṭup, **svaraḥ** gaandhaaraḥ.

yatpuruṣheṇa haviṣhaa devaa yajñamatanvata,
vasanto'syaaseedaajyaṅ greeṣhma' idhmaḥ sharaddhaviḥ.

Yajuḥ 31:14, Ṛig 10:7:90:6, Atharva 19:1:6:10

yat puruṣheṇa haviṣhaa devaaḥ yajñam atanvata
vasantaḥ asya aaseet aajyam greeṣhmaḥ idhmaḥ sharat haviḥ.

(*yat*) **When the** (*devaaḥ*) **scholars and sages** (*atanvata*) **extended their** (*yajñam*) **mental connection with the** (*haviṣhaa*) **selfless** (*puruṣheṇa*) **God, they found that the cycles of time and seasons were created by him as well. The time of the day is also important for the performance of meditation and sacrificial yajña. The** (*vasantaḥ*) **spring season i.e. the morning** (*aaseet*) **is the** (*aajyam*) **butter** (*asya*) **for this yajña, the** (*greeṣhmaḥ*) **summer i.e. the afternoon is the sacrificial** (*idhmaḥ*) **wood and the** (*sharat*) **winter i.e. the night is** (*haviḥ*) **fragrant sacrificial herbs. Meditation and yajña can be done anytime, however, the morning time is the best for it.**

In the fifteenth mantra the sage discusses the mental connection with the God.

15.ṛiṣhiḥ naaraayaṇaḥ, **devataa** puruṣhaḥ, **vowels** 32(34), **chhandaḥ** aarṣhy anuṣhṭup, **svaraḥ** gaandhaaraḥ.

saptaasyaasan paridhayastriḥ sapta samidhaḥ kṛitaaḥ,
devaa yadyajñan tanvaanaa' abadhnan puruṣham pashum.

Yajuḥ 31:15, Ṛig 10:7:90:15, Atharva 19:1:6:15

sapta asya aasan paridhayaḥ triḥ sapta samidhaḥ kṛitaaḥ
devaaḥ yat yajñam tanvaanaaḥ abadhnan puruṣham pashum.

(*पशुम्*) **सर्वद्रष्टा** (*पुरुषम्*) **परमात्मा से मानसिक सम्बन्ध के लिए किए गए** (*यत्*) **जिस** (*यज्ञम्*) **यज्ञ का** (*तन्वानाः*) **विस्तार करते हुए,** (*देवाः*) **विद्वान् जन अपने विचारों को** (*अबध्नन्*) **बाँधते हैं, ईश्वर के** (*सप्त*) **सात प्रमुख गुण (व्याहृतियाँ - भूः भुवः स्वः महः जनः तपः व सत्यम्)** (*अस्य*) **उस यज्ञ की** (*परिऽधयः*) **परिधियाँ** (*आसन्*) **है ।** (*त्रिः*) **तीन गुणों (सत्व, रजस् व तमस्) वाले** (*सप्त*) **सात प्राकृतिक तत्त्व (महत्, अहङ्कार और पाँच तन्मात्राएं - शब्द, स्पर्श, रूप, रस व गन्ध) को इस ध्यान रूपी मानसिक यज्ञ का** (*सम्ऽइधः*) **इन्धन** (*कृताः*) **जानो ।**

सोलहवे मन्त्र में मोक्ष प्राप्ति के लिए उत्तम कर्मों को करने का महत्त्व दर्शाया गया है ।

नारायण ऋषिः। पुरुषो देवता । ४२(४३) अक्षराणि । विराडार्षी त्रिष्टुप् छन्दः। धैवतः स्वरः।

यज्ञेन॑ यज्ञम॑यजन्त देवास्तानि धर्मा॑णि प्रथमान्या॑सन् ।

ते ह नाकं॑ महिमानः॑ सचन्त यत्र पूर्वे॑ साध्याः सन्ति॑ देवाः ॥१६॥

यजुः ३१:१६, ऋग् १०:७:९०:१६

यज्ञेन॑ । यज्ञम् । अयजन्त । देवाः। तानि॑। धर्मा॑णि । प्रथमानि॑। आसन् ।

ते । ह । नाक॑म् । महिमानः॑। सचन्त । यत्र॑ । पूर्वे॑ । साध्याः। सन्ति॑ । देवाः ॥१६॥

(*देवाः*) **विद्वान्** (*यज्ञेन*) **तप, दान आदि जिन कर्मों के द्वारा** (*यज्ञम्*) **पूजनीय प्रभु को** (*अयजन्त*) **पूजते हैं,** (*तानि*) **वह** (*धर्माणि*) **धार्मिक कर्म** (*प्रथमानि*) **आदिकाल से** (*ह*) **ही प्रमुख कर्म** (*आसन्*) **हैं ।** (*ते*) **इनको करने वाले** (*महिमानः*) **महान मनुष्य** (*नाकम्*) **दुःखरहित मोक्षधाम को** (*सचन्त*) **प्राप्त होते हैं,** (*यत्र*) **जहाँ** (*पूर्वे*) **पहले से इस** (*साध्याः*) **साधना को किए हुए** (*देवाः*) **ब्रह्म व आत्मा ज्ञान के द्रष्टा** (*सन्ति*) **निवास करते हैं ।**

सत्रहवे मन्त्र में मनुष्यों की रचना का वर्णन है ।

उत्तर नारायण ऋषिः। आदित्यो देवता । ४५(४६) अक्षराणि । भुरिगार्षी त्रिष्टुप् छन्दः। धैवतः स्वरः।

अद्भ्यः सम्भृ॑तः पृथिव्यै रसा॑च्च विश्वक॑र्मणः समव॑र्त्तताग्रे॑ ।

तस्य त्वष्टा॑ विदध॑द्रूपमे॑ति तन्मर्त्य॑स्य देवत्वमाजानमग्रे॑ ॥१७॥ यजुः ३१:१७

अद्भ्य इत्यत्ऽभ्यः। सम्भृ॑त इति॑ सम्ऽभृ॑तः। पृथिव्यै । रसा॑त् । च । विश्वक॑र्मण इति॑ विश्वऽक॑र्मणः। सम् । अवर्त्तत । अग्रे॑ । तस्य॑ । त्वष्टा॑ । विदध॑दिति॑ विऽदध॑त् । रूपम् । एति । तत् । मर्त्य॑स्य । देवत्वमिति॑ देवऽत्वम् । आजानमित्याऽजान॑म् । अग्रे॑ ॥१७॥

In order to (*tanvaanaaḥ*) **extend their** (*abadhnan*) **mental connection with the** (*puruṣham*) **God who** (*pashum*) **witnesses every event of this universe, the** (*devaaḥ*) **scholars engage in** (*yat*) (*yajñam*) **meditation. This process of mediation** (*asya*) (*aasan*) **has God's** (*sapta*) **seven basic qualities (*bhooḥ, bhuvaḥ, svaḥ, mahaḥ, janaḥ, tapaḥ* and *satyam*) as** (*paridhayaḥ*) **protective boundaries. The** (*sapta*) **seven basic elements of Nature (*mahat, ahaṅkaara* and five subtle elements i.e. *shabda, sparsha, roopa, rasa* and *gandha*) each with** (*triḥ*) **three tendencies (*satva, rajas* and *tamas*)** (*kṛitaaḥ*) **form the** (*samidhaḥ*) **fuel of this yajña.**

In the sixteenth mantra the sage discusses the importance of performance of deeds in accordance with the dharma, in order to attain salvation.

16.ṛiṣhiḥ naaraayaṇaḥ, **devataa** puruṣhaḥ, **vowels** 42(43), **chhandaḥ** viraaḍ aarṣhee triṣhṭup, **svaraḥ** dhaivataḥ.

yajñena yajñamayajanta devaastaani dharmaaṇi prathamaanyaasan,
te ha naakam mahimaanaḥ sachanta yatra poorve saadhyaaḥ santi devaaḥ.

Yajuḥ 31:16, Ṛig 10:7:90:16

yajñena yajñam ayajanta devaaḥ taani dharmaaṇi prathamaani aasan
te ha naakam mahimaanaḥ sachanta yatra poorve saadhyaaḥ santi devaaḥ.

(*taani*) **The actions, like** (*yajñena*) **meditation, forbearance, charity etc. that the** (*devaaḥ*) **learned perform as the** (*ayajanta*) **act of worshipping the** (*yajñam*) **God,** (*aasan*) **are the** (*prathamaani*) **primary** (*dharmaaṇi*) **responsibilities since the beginning of the Creation.** (*te*) **Those** (*mahimaanaḥ*) **elevated souls** (*ha*) **who diligently perform these actions** (*sachanta*) **attain the heavenly regions, regions that are** (*naakam*) **free from all sorrows and** (*yatra*) **where** (*santi*) **reside the** (*devaaḥ*) **scholars who** (*poorve*) **were successful in the** (*saadhyaaḥ*) **pursuit of eternal knowledge.**

In the seventeenth mantra the sage discusses the creation of the mankind.

17.ṛiṣhiḥ uttara naaraayaṇaḥ, **devataa** aadityaḥ, **vowels** 45(46), **chhandaḥ** bhurig aarṣhee triṣhṭup, **svaraḥ** dhaivataḥ.

adbhyaḥ sambhṛitaḥ pṛithivyai rasaachcha vishvakarmaṇaḥ samavarttataagre,
tasya tvaṣhṭaa vidadhadroopameti tanmartyasya devatvamaajaanamagre.

Yajuḥ 31:17

adbhyaḥ sambhṛitaḥ pṛithivyai rasaat cha vishva-karmaṇaḥ sam avarttata agre
tasya tvaṣhṭaa vidadhat roopam eti tat martyasya devatvam aajaanam agre.

सृष्टि के आरम्भ में (*विश्वऽकर्मणः*) **जगत् रचयिता ईश्वर ने प्राणियों के** (*सम्ऽभृतः*) **भली प्रकार भरण पोषण के लिए, प्रकृति के** (*रसात्*) **अणुओं से पञ्च महाभूतों ((***अत्ऽभ्यः***) जल,** (*पृथिव्यै*) **पृथ्वी, अग्नि, वायु** (*च*) **और आकाश) को बना,** (*सम्*) **सब ओर** (*अग्रे*) **पहले इस जगत् के** (*अवर्त्तत*) **आस्तित्व को साकार किया ।** (*तस्य*) **इस जगत् का** (*रूपम्*) **रूप उस** (*त्वष्टा*) **कुशल शिल्पी के** (*विऽदधत्*) **विधान के अनुसार** (*एति*) **बना ।** (*तत्*) **और फिर अमैथुनी विधि से** (*मर्त्यस्य*) **मनुष्य जाति का आरम्भ किया । मनुष्यों का** (*अग्रे*) **सबसे पहला जत्था, मोक्ष प्राप्त ज्ञानवान आत्माओं का बनाया, जिससे आगामी पीढ़ियों को** (*आऽजानम्*) **अच्छे कर्म, कर्त्तव्यों की** (*देवऽत्वम्*) **विद्वत्ता मिले ।**

अट्ठारहवे मन्त्र में ऋषि परमेश्वर के बारे में अपने स्वयं के ज्ञान का वर्णन करते हैं ।

उत्तर नारायण ऋषिः। आदित्यो देवता । ४३(४७) अक्षराणि । निचृदार्षी त्रिष्टुप् छन्दः। धैवतः स्वरः।

वेदाहमेतं पुरुषं महान्तमादित्यवर्णं तमसः परस्तात् ।

तमेव विदित्वाऽति मृत्युमेति नान्यः पन्था विद्यतेऽयनाय ॥१८॥ यजुः ३१:१८

वेद । अहम् । एतम् । पुरुषम् । महान्तम् । आदित्यवर्णमित्यादित्यऽवर्णम् । तमसः। परस्तात् ।

तम् । एव । विदित्वा । अति । मृत्युम् । एति । न । अन्यः। पन्थाः। विद्यते । अयनाय ॥१८॥

हे मनुष्यों! (*अहम्*) **मैं** (*एतम्*) **इस** (*आदित्यऽवर्णम्*) **सूर्य के समान तेज वाले,** (*तमसः*) **अज्ञान के अन्धकार** (*परस्तात्*) **से परे,** (*महान्तम्*) **महान् गुणों से युक्त,** (*पुरुषम्*) **परमेश्वर को** (*वेद*) **जानता हूँ । तुम** (*एव*) **भी** (*तम्*) **उसी को** (*विदित्वा*) **जान के** (*मृत्युम्*) **दुःखदायी जन्म-मृत्यु के चक्र से** (*अति*) **मुक्त हो** (*एति*) **सकते हो । इसके अतिरिक्त** (*अयनाय*) **मोक्ष प्राप्त करने का** (*अन्यः*) **और कोई** (*पन्थाः*) **मार्ग** (*न*) **नहीं** (*विद्यते*) **है ।**

उन्नीसवे मन्त्र में ईश्वर को अनुभव करने का तरीका बतलाया गया है ।

उत्तर नारायण ऋषिः। आदित्यो देवता । ४५(४५) अक्षराणि । भुरिगार्षी त्रिष्टुप् छन्दः। धैवतः स्वरः।

प्रजापतिश्चरति गर्भेऽअन्तरजायमानो बहुधा वि जायते ।

तस्य योनिं परि पश्यन्ति धीरास्तस्मिन्ह तस्थुर्भुवनानि विश्वा ॥१९॥

यजुः ३१:१९, अथर्व १०:४:८:१३

प्रजापतिरिति प्रजाऽपतिः। चरति । गर्भे । अन्तः। अजायमानः। बहुधा । वि । जायते ।

तस्य । योनिम् । परि । पश्यन्ति । धीराः। तस्मिन् । ह । तस्थुः। भुवनानि । विश्वा ॥१९॥

For the (*sambhṛitaḥ*) **proper sustenance of all living beings,** (*agre*) **at the beginning, the** (*vishva-karmaṇaḥ*) **Creator,** (*rasaat*) **from the particles of matter created the five elements (the** (*adbhyaḥ*) **water, the** (*pṛithivyai*) **earth or the celestial bodies, the fire, the air** (*cha*) **and the skies or the emptiness) and** (*avarttata*) **brought into existence this** (*sam*) **vast universe. The** (*roopam*) **characteristics** (*tasya*) **of this universe** (*eti*) **were as per the** (*vidadhat*) **plans of the** (*tvaṣhṭaa*) **Sculptor. And then,** (*tat*) **he started the human race by creating** (*agre*) **initial batch** (*martyasya*) **of humans by asexual means. This initial batch consisted of liberated souls so that the** (*devatvam*) **Vedic wisdom and knowledge of** (*aajaanam*) **righteous conduct and duties can be propagated in future generations.**

In the eighteenth mantra the sage describes his own knowledge of god.

18.ṛiṣhiḥ uttara naaraayaṇaḥ, **devataa** aadityaḥ, **vowels** 43(47), **chhandaḥ** nichṛid aarṣhee triṣhṭup, **svaraḥ** dhaivataḥ.

vedaahametam puruṣham mahaantamaadityavarṇan tamasaḥ parastaat,
tameva viditvaa’ti mṛityumeti naanyaḥ panthaa vidyate’yanaaya.

Yajuḥ 31:18

veda aham etam puruṣham mahaantam aaditya-varṇam tamasaḥ parastaat
tam eva viditvaa ati mṛityum eti na anyaḥ panthaaḥ vidyate ayanaaya.

O Human! (*aham*) **I** (*veda*) **know about** (*etam*) **this** (*puruṣham*) **Supreme Soul that is** (*varṇam*) **radiant like** (*aaditya*) **Sun, is** (*parastaat*) **far removed from** (*tamasaḥ*) **the darkness of ignorance, and is the** (*mahaantam*) **possessor of great and divine qualities. By** (*viditvaa*) **knowing** (*tam*) **him, you** (*eva*) **too** (*eti*) **can be** (*ati*) **liberated from the** (*mṛityum*) **sorrowful cycle of birth and death. Apart from knowing him,** (*vidyate*) **there is** (*na*) **no** (*anyaḥ*) **other** (*panthaaḥ*) **way of** (*ayanaaya*) **attaining liberation.**

In the nineteenth mantra the sage describes the way to perceive God.

19.ṛiṣhiḥ uttara naaraayaṇaḥ, **devataa** aadityaḥ, **vowels** 45(45), **chhandaḥ** bhurig aarṣhee triṣhṭup, **svaraḥ** dhaivataḥ.

prajaapatishcharati garbhe’antarajaayamaano bahudhaa vi jaayate,
tasya yonim pari pashyanti dheeraastasminha tasthurbhuvanaani vishvaa.

Yajuḥ 31:19, Atharva 10:4:8:13

prajaapatiḥ charati garbhe antaḥ ajaayamaanaḥ bahudhaa vi jaayate
tasya yonim pari pashyanti dheeraaḥ tasmin ha tasthuḥ bhuvanaani vishvaa.

(प्रजाऽपतिः) **सभी जीवों का पालक व रक्षक, स्वयम्** *(अजायमानः)* **अव्यक्त होते हुए भी,** *(गर्भे)* *(अन्तः)* **गर्भों मे जीवात्मा के द्वारा चेतना देते हुए** *(चरति)* **विद्यमान है। वह स्वयं काया रहित होते हुए भी सृष्टि में सर्वव्यापी हो** *(बहुधा)* **विविध रूपों में अपनी** *(वि)* *(जायते)* **अनुभूति कराता है।** *(तस्मिन्)* *(ह)* **वह** *(विश्वा)* **ब्रह्माण्ड के सभी** *(भुवनानि)* **लोको आदि में** *(तस्थुः)* **ठहरा हुआ है।** *(धीराः)* **योगी** *(तस्य)* **उसके** *(योनिम्)* **स्वरूप को** *(परि)* **सभी दिशाओं में** *(पश्यन्ति)* **देखते हैं।**

बीसवे मन्त्र में ब्रह्मतेज को ही सभी प्रकाशों का स्रोत बतलाया गया है।

उत्तर नारायण ऋषिः। सूर्यो देवता। ३२(३२) अक्षराणि। आर्ष्यनुष्टुप् छन्दः। गान्धारः स्वरः।

यो देवेभ्य॑ऽआतप॑ति यो देवानां॑ पुरोहि॑तः।

पूर्वो यो देवेभ्यो॑ जातो नमो॑ रुचाय ब्राह्म॑ये ॥२०॥ यजुः ३१:२०

यः। देवेभ्य॑ः। आतपतीत्या॑ऽतप॑ति। यः। देवाना॑म्। पुरोहि॑त इति॑ पुरःऽहि॑तः।

पूर्वः। यः। देवेभ्य॑ः। जातः। नम॑ः। रुचाय॑। ब्राह्म॑ये ॥२०॥

(यः) **जो** *(देवेभ्यः)* **पृथ्वी आदि के लिए** *(आऽतपति)* **भली प्रकार तपता है,** *(यः)* **जो** *(देवेभ्यः)* **पृथ्वी आदि से** *(पूर्वः)* **पहले** *(देवानाम्)* **उनके** *(पुरःऽहितः)* **हित के लिए** *(जातः)* **उत्पन्न हुआ,** *(यः)* **उस अन्नदायक सूर्य को तेज प्रदान करने वाले** *(ब्राह्मये)* *(रुचाय)* **ब्रह्मतेज को** *(नमः)* **नमन।**

इक्कीसवे मन्त्र में ब्रह्मज्ञान के महत्त्व का वर्णन है।

उत्तर नारायण ऋषिः। विश्वेदेवा देवताः। ३२(३३) अक्षराणि। आर्ष्यनुष्टुप् छन्दः। गान्धारः स्वरः।

रुचं ब्राह्मं जनयन्तो देवाऽअग्रे तद॑ब्रुवन्।

यस्त्वैवं ब्रा॑ह्मणो विद्यात्तस्य॑ देवाऽअसन्वशे॑ ॥२१॥ यजुः ३१:२१

रुचम्। ब्राह्मम्। जनय॑न्तः। देवाः। अग्रे॑। तत्। अब्रुवन्।

यः। त्वा। एवम्। ब्राह्मणः। विद्यात्। तस्य॑। देवाः। असन्। वशे॑ ॥२१॥

(अग्रे) **सृष्टि के आरम्भ से ही** *(देवाः)* **ऋषि, मुनि और विद्वान् जन,** *(तत्)* **उस** *(ब्राह्मम्)* **ब्रह्म** *(रुचम्)* **तेज और ज्ञान को** *(जनयन्तः)* **प्रकट करते हुए अपने प्रवचनों में यह** *(अब्रुवन्)* **कहते हैं कि** *(यः)* **जो** *(त्वा)* **भी** *(ब्राह्मणः)* **व्यक्ति** *(एवम्)* **इस ब्रह्म ज्ञान को** *(विद्यात्)* **जान लेता है सभी** *(देवाः)* **विद्वान्, देवता आदि** *(तस्य)* **उसके** *(वशे)* **वश मे** *(असन्)* **हो जाते हैं।**

God, the (*prajaapatiḥ*) Sustainer and Protector of all, (*charati*) manifests consciousness (*garbhe*) (*antaḥ*) in the fetus via the soul. Being (*ajaayamaanaḥ*) abstract himself, he makes his (*vi*) (*jaayate*) presence felt in (*bahudhaa*) many ways. (*tasmin*) (*ha*) He is the one who is (*tasthuḥ*) established in all of the (*bhuvanaani*) Worlds, in the (*vishvaa*) universe. The (*dheeraaḥ*) steadfast yogis (*pashyanti*) visualize (*tasya*) his (*yonim*) presence in (*pari*) all directions.

In the twentieth mantra the sage describes the God as source of all illumination.

20.ṛiṣhiḥ uttara naaraayaṇaḥ, **devataa** sooryaḥ, **vowels** 32(32), **chhandaḥ** aarṣhy anuṣhṭup, **svaraḥ** gaandhaaraḥ.

yo devebhya'aatapati yo devaanaam purohitaḥ,
poorvo yo devebhyo jaato namo ruchaaya braahmaye. Yajuḥ 31:20

yaḥ devebhyaḥ aatapati yaḥ devaanaam purohitaḥ
poorvaḥ yaḥ devebhyaḥ jaataḥ namaḥ ruchaaya braahmaye.

We (*namaḥ*) bow to the (*braahmaye*) God's (*ruchaaya*) aura from which, the Sun derives its radiance. The Sun, (*yaḥ*) who (*jaataḥ*) came into existence (*poorvaḥ*) before other (*devebhyaḥ*) divinities like earth etc., (*yaḥ*) who (*aatapati*) burns for the (*purohitaḥ*) benefit (*devaanaam*) of the divinities and (*yaḥ*) who is the provider of grains.

In the twenty-first mantra the sage describes the importance of the eternal knowledge contained in the Vedas.

21.ṛiṣhiḥ uttara naaraayaṇaḥ, **devataaḥ** vishvedevaaḥ, **vowels** 32(33), **chhandaḥ** aarṣhy anuṣhṭup, **svaraḥ** gaandhaaraḥ.

rucham braahmañ janayanto devaa'agre tadabruvan,
yastvaivam braahmaṇo vidyaattasya devaa'asanvashe. Yajuḥ 31:21

rucham braahmam janayantaḥ devaaḥ agre tat abruvan
yaḥ tvaa evam braahmaṇaḥ vidyaat tasya devaaḥ asan vashe.

(*agre*) **Since the beginning of the creation, the** (*devaaḥ*) **sages and scholars have** (*janayantaḥ*) **revealed this** (*braahmam*) **divine** (*rucham*) **knowledge and** (*abruvan*) **have said** (*tat*) **that** (*yaḥ*) (*tvaa*) (*braahmaṇaḥ*) **whosoever** (*vidyaat*) **acquires** (*evam*) **this divine knowledge and acts accordingly,** (*tasya*) **he/she** (*asan*) **can attain** (*vashe*) **command over** (*devaaḥ*) **divine powers.**

बाईसवे मन्त्र में ईश्वर से ज्ञान और सुख प्रदान करने के लिए प्रार्थना है।

उत्तर नारायण ऋषिः। आदित्यो देवता। ४३(४५) अक्षराणि। निचृदार्षी त्रिष्टुप् छन्दः। धैवतः स्वरः।

श्रीश्च॑ ते ल॒क्ष्मीश्च॒ पत्न्या॑वहोरा॒त्रे पा॒र्श्वे नक्ष॑त्राणि रू॒पम॒श्विनौ॒ व्यात्त॑म्।

इ॒ष्णन्नि॑षाणा॒मुं म॑ऽइषाण सर्वलो॒कं म॑ऽइषाण ॥२२॥ यजुः ३१:२२

श्रीः। च॒। ते॒। ल॒क्ष्मीः। च॒। पत्न्यौ॑। अ॒हो॒रा॒त्रेऽइत्य॑हःऽरात्रे। पार्श्वेऽइति॑ पा॒र्श्वे। नक्ष॑त्राणि। रू॒पम्। अ॒श्विनौ॑। व्यात्त॒मिति॑ वि॒ऽआत्त॑म्। इष्णन्। इ॒षा॒ण। अ॒मुम्। मे॒। इ॒षा॒ण। स॒र्वलो॒कमिति॑ सर्वऽलो॒कम्। मे॒। इ॒षा॒ण ॥२२॥

हे परमेश्वर! (*श्रीः*) **शोभा** (*च*) **व** (*लक्ष्मीः*) **ज्ञानयुक्त ऐश्वर्य** (*ते*) **आपकी** (*पत्न्यौ*) **संगनियां हैं** (*च*) **और** (*अहोरात्रे*) **दिन रात दो** (*पार्श्वे*) **पहलू।** (*नक्षत्राणि*) **सभी चमकदार नक्षत्र आपकी तेजोमय** (*रूपम्*) **छवि हैं और** (*अश्विनौ*) **सूर्य, चन्द्र आदि द्युलोक आपका** (*विऽआत्तम्*) **विस्तार। हे** (*इष्णन्*) **वासना के नाशक ईश्वर! सभी को सन्मार्ग की ओर** (*इषाण*) **प्रेरित करो।** (*मे*) **मुझे** (*अमुम्*) **वह मोक्ष पद** (*इषाण*) **प्राप्त कराओ। सभी** (*सर्वऽलोकम्*) **लोकों का ज्ञान और भोग्य सुख** (*मे*) **मुझे** (*इषाण*) **प्राप्त कराओ।**

In the twenty-second mantra the sage prays for the boon of knowledge and happiness.

22.ṛiṣhiḥ uttara naaraayaṇaḥ, **devataa** aadityaḥ, **vowels** 43(45), **chhandaḥ** nichṛid aarṣhee triṣhṭup, **svaraḥ** dhaivataḥ.

shreeshcha te lakṣhmeeshcha patnyaavahoraatre paarshve nakṣhatraaṇi roopamashvinau vyaattam,
iṣhṇanniṣhaaṇaamum ma'iṣhaaṇa sarvalokam ma'iṣhaaṇa. Yajuḥ 31:22

shreeḥ cha te lakṣhmeeḥ cha patnyau ahaḥ-raatre paarshve nakṣhatraaṇi roopam ashvinau vi-aattam iṣhṇan iṣhaaṇa amum me iṣhaaṇa sarva-lokam me iṣhaaṇa.

O Supreme Lord! (*shreeḥ*) **Grandeur** (*cha*) **and the** (*lakṣhmeeḥ*) **wealth of knowledge are** (*te*) **your two** (*patnyau*) **companions.** (*cha*) **And** (*ahaḥ-raatre*) **day and night are your** (*paarshve*) **aspects. The** (*nakṣhatraaṇi*) **shinning stars represent your** (*roopam*) **characteristics.** (*ashvinau*) **The sun, the moon and other celestial bodies represent your** (*vi-aattam*) **vastness. O** (*iṣhṇan*) **slayer of desire, please** (*iṣhaaṇa*) **guide everyone towards noble deeds. Please** (*iṣhaaṇa*) **help** (*me*) **me attain** (*amum*) **that desired mokṣha. Please** (*iṣhaaṇa*) **bestow on** (*me*) **me the knowledge, wealth and happiness of** (*sarva*) **all of the** (*lokam*) **World.**